हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम धन्य हो!
इस बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है।

जैसा कि हम जानते हैं, शैतान हमारा मुख्य शत्रु है। बाइबल हमें बताती है कि वह गर्जने वाले सिंह के समान चारों ओर घूमता है, यह देखने के लिए कि वह किसे निगल सके।

1 पतरस 5:8:
“सावधान रहो और जागते रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान, गर्जने
वाले सिंह के समान घूमता फिरता है और किसी को निगलने की ताक
में रहता है।”

इसका मतलब है कि हम हमेशा उसके हमलों के निशाने पर रहते हैं, और हमें जागरूक रहना बहुत ज़रूरी है। यह “निगलना” आत्मिक विनाश (जैसे कि प्रलोभन, पाप और झूठे उपदेश) और शारीरिक हानि (जैसे बीमारी, मानसिक पीड़ा और निराशा) दोनों को दर्शाता है। यह समझना आवश्यक है कि शत्रु केवल तब हमला नहीं करता जब हम पाप करते हैं, बल्कि वह किसी भी समय हमला कर सकता है – यहाँ तक कि जब हम धार्मिक जीवन जीने की कोशिश कर रहे हों।

शैतान के हमले कई तरीकों से आते हैं – आत्मिक और शारीरिक दोनों।

यह शारीरिक रोगों या आत्मिक संघर्षों के रूप में सामने आ सकते हैं, जैसे बुरी आत्माओं की पीड़ा, डर, संदेह या तरह-तरह की कमज़ोरियाँ। अगर आप अपने जीवन में इन लक्षणों को देख रहे हैं, तो यह संभव है कि शत्रु ने आप पर हमला किया है।

इफिसियों 6:12:
“क्योंकि हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं, बल्कि उन
शक्तियों, अधिकारों, और इस अंधकारमय संसार के शासकों से है,
और स्वर्गिक स्थानों में कार्यरत दुष्ट आत्मिक शक्तियों से है।”

शैतान के प्रमुख प्रवेश-द्वार

व्यभिचार और बलात्कार (Unchastity)

शैतान जिस सबसे विनाशकारी दरवाज़े का इस्तेमाल करता है, वह है व्यभिचार और यौन अनैतिकता। यह पाप टोने-टोटके से भी अधिक घातक है।

1 कुरिन्थियों 6:18:
“व्यभिचार से दूर रहो। हर दूसरा पाप जो मनुष्य करता है, शरीर

के बाहर होता है, परन्तु जो व्यभिचार करता है, वह अपने ही शरीर के विरुद्ध पाप करता है।”

यौन पाप केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं है – यह हमारे शरीर के विरुद्ध पाप है, जो पवित्र आत्मा का मंदिर है।

1 कुरिन्थियों 6:19:
“क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में वास करता है?”

जब कोई यौन अनैतिकता में संलग्न होता है, तो यह ऐसा है जैसे वह अपने शरीर को अशुद्ध आत्माओं के लिए खोल रहा हो।

अन्य दरवाज़े जिनसे शत्रु हमला करता है वे हैं – टोना-टोटका, मूर्तिपूजा, क्षमा न करना, द्वेष, और यहाँ तक कि हत्या।

मत्ती 15:19:
“क्योंकि हृदय से ही बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, बलात्कार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा निकलती है।”

ये सब आत्मिक और शारीरिक विनाश के लिए रास्ते बनाते हैं।

अब आप सोच सकते हैं, “मैं तो न व्यभिचार करता हूँ, न टोना-टोटका, न मूर्तिपूजा। मैं शराब नहीं पीता, हत्या नहीं करता। मैं तो परमेश्वर के वचन के अनुसार जीने की कोशिश करता हूँ – फिर भी मुझे हमलों का सामना करना पड़ रहा है।”

अगर ऐसा है, तो संभव है कि एक और दरवाज़ा है जिससे शैतान आपको चोट पहुँचा रहा है – और वह है प्रार्थना का अभाव।

प्रार्थना की शक्ति

यहाँ जिस प्रार्थना की बात हो रही है, वह वह नहीं है जो कोई आपके लिए करता है – जैसे कि कोई पास्टर आपके ऊपर हाथ रखकर प्रार्थना करे।
यह है आपकी व्यक्तिगत प्रार्थना – वह समय जब आप स्वयं परमेश्वर से बात करते हैं, अपने जीवन और दूसरों के लिए विनती करते हैं।

फिलिप्पियों 4:6:
“किसी बात की चिंता न करो, परन्तु हर बात में, तुम्हारी

प्रार्थनाएँ और विनतियाँ धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत की जाएँ।”

यह प्रार्थनाएँ संक्षिप्त या जल्दबाज़ी में नहीं होनी चाहिए – इनका समय कम से कम एक घंटा होना चाहिए। न कि हफ्ते में एक बार या महीने में, बल्कि हर दिन।

शैतान ने बहुतों को धोखा दिया है कि जब उन्होंने यीशु को स्वीकार कर लिया है, तो अब उन्हें हर दिन प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। वे सोचते हैं कि प्रभु के लहू ने उन्हें ढक लिया है, इसलिए दैनिक प्रार्थना की ज़रूरत नहीं। परन्तु धोखा मत खाओ! यहाँ तक कि यीशु, जो पवित्र और निष्पाप थे, उन्होंने भी लगातार और गहराई से प्रार्थना की।

इब्रानियों 5:7:
“यीशु ने अपने जीवन के दिनों में ज़ोर से पुकार कर और आँसू बहाकर प्रार्थनाएँ और विनतियाँ परमेश्वर से कीं, जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, और उसकी भक्ति के कारण उसकी सुनी
गई।”

यीशु स्वयं कहते हैं:

लूका 22:46:
“तुम क्यों सो रहे हो? उठो और प्रार्थना करो, ताकि तुम
परीक्षा में न पड़ो।”

प्रार्थना को नहाने की तरह समझो। जो व्यक्ति रोज़ नहाता है, वह बीमारियों से बचा रहता है। परन्तु जो नहीं नहाता, चाहे वह अच्छा भोजन करता हो, थोड़े समय बाद बीमारी आ ही जाएगी।

इसी प्रकार, जो व्यक्ति सिर्फ बाइबिल पढ़ता है या पाप से दूर रहता है, लेकिन प्रार्थना नहीं करता, वह आत्मिक रूप से एक समय बाद कमजोर हो जाएगा। शत्रु को रास्ता मिल जाएगा।

1 पतरस 5:8-9:
“सावधान रहो और जागते रहो! तुम्हारा शत्रु शैतान, गर्जने वाला सिंह है और किसी को निगलने की ताक में रहता है।
उसका सामना विश्वास में डटकर करो।”

बिना प्रार्थना के, शत्रु का सामना करना मुश्किल हो जाता है – और हम अचानक होने वाले आत्मिक हमलों से आश्चर्यचकित हो जाते

हैं।

परंतु जब आप वचन पढ़ते हैं, पाप से दूर रहते हैं, और नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं, तो यह ऐसा है जैसे कोई अच्छा भोजन करता है, रोज़ नहाता है और अच्छे स्वास्थ्य में रहता है। ऐसा व्यक्ति शारीरिक और आत्मिक रूप से मजबूत रहता है – शत्रु के लिए कोई दरवाज़ा नहीं खुला रहता।

मत्ती 26:40:
“फिर वह शिष्यों के पास आया और उन्हें सोते हुए पाया। और
उसने पतरस से कहा, ‘क्या तुम मेरे साथ एक घंटे भी नहीं जाग सके?’”

मत्ती 26:41:
“जागते रहो और प्रार्थना करो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर निर्बल है।”

अपने प्रार्थना जीवन की आत्म-चिन्तन करें

तो अगर आप अभी भी आत्मिक संघर्ष से गुजर रहे हैं, तो अपने प्रार्थना जीवन पर एक नज़र डालिए।
अपने आप से पूछिए: आखिरी बार आपने एक घंटे तक प्रार्थना कब की थी?

याकूब 4:2:
“तुम्हारे पास नहीं है, क्योंकि तुम मांगते नहीं हो।”

शायद आप व्यभिचार या टोना नहीं करते, लेकिन यदि आप प्रार्थना नहीं कर रहे, तो समस्या वहीं है।

चाहे आपने अभी तक प्रार्थना न करने का नतीजा न देखा हो – वह ज़रूर आएगा।

होशे 4:6:
“मेरे लोग ज्ञान के अभाव से नष्ट हो जाते हैं।”

जब हम प्रार्थना की आत्मिक अनुशासन को खो देते हैं, तो हम आत्मिक रूप से असुरक्षित हो जाते हैं। मुसीबत आने से पहले संभल

□□□□
□□ □□ □□□□□□ □□□ – □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□

□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□□!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp